## ईश्वर प्राप्ति का निश्चित उपाय

- ज़िक्र ख़फ़ी यानी दिल का जाप किया करें,
- नाजिन्स और ग़ैर आदमी और ग़ैर सोहबत के नक़्शों से दिल को साफ़ रखें,
- परमात्मा के सिवाय किसी की तरफ तवज़्ज़ोह न करें,
- यक़सुई और एकाग्रता के साथ दिल हाज़िर रखने की तरफ़ पक्क़ा इरादा करें,
- सत् और मालिक की तरफ़ उनसियत और लगाव हासिल करें,
- अपने आपे को मेटकर उसी में महब और लय हो जायें,
- इसी काम में अपने आपको मिटा दें,
- सबसे ज़्यादा नज़दीक रास्ता और असल पद कर पहुँचने का यक़ीनी ज़रिया है।

(समर्थगुरु परमसन्त, महात्मा रामचन्द्र जी महाराज)

# करतार सन्देश

(प्रेम, सेवा, सदाचार की परमार्थिक पत्रिका)

दयादान

क्षमाप्रेम

सेवासमर्पण

अंक- एकादश    अप्रेल - 2018    वर्ष-पंचम

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर

# रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर

ॐ

**समर्थ सद्गुरु परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (लालाजी साहिब)**

**प्रणेता रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर**

*(अवतरण 02.02.1873)*

## अनमोल हितोपदेश

अपने ख़्यालों को हमेशा शुद्ध करते जाओ। ख़्यालों पर काबू पाने की कोशिश करो। बुद्धि को सांसारिक विचारों से हटाकर संतों की वाणी, शास्त्रों के उपदेश और परमात्मा के नाम में लगाओ। मन की इच्छाओं पर विजय पाओ और मन को गुरु के ध्यान में लगाओ। मन की इच्छाओं का आचार ठीक करो। कोशिश करो कि, इन्द्रियाँ सांसारिक विष्ठा रूपी पदार्थों की बजाय हर जगह ईश्वर को देखें। यही रहनी-सहनी का ठीक करना है।

मन को काबू में लाना बहुत ही मुश्किल काम है, बल्कि दुनियाँ में सबसे मुश्किल काम है। वैराग्य और अभ्यास दो ही इसके साधन हैं। यह निश्चय हो जाना कि, यह चीज़ें क्षणभंगुर हैं यानी तब्दील होने वाली है और उनसे हमेशा का सुख नहीं मिल सकता, उनसे अलहदगी अख़्तयार कर लेनी चाहिए, यही वैराग्य है। परमात्मा का नाम दिल की ज़ुबान यानी ख़्याल से लेते रहना अभ्यास है।

जब-जब मौका मिले, संतों-गुरुजनों की सेवा करो। उनको प्रसन्न करो, उनके उपदेशों को हित्त-चित्त से सुनो और उन पर अमल करने की कोशिश करो, हमेशा पूरी कामयाबी होगी, कभी निराशा नहीं होगी। यही ईश्वर-प्राप्ति का सच्चा, सीधा और सहज रास्ता है।

अहं को दीनता में बदल दो। इससे मन का मान घटता जाता है और ईश्वर प्रेम बढ़ता जाता है। अपने आपको दुनियाँ का सेवक समझो, सबमें ईश्वर का रूप देखो, इससे दीनता आती है।

मन की हालत को देखते चलो और गुरु की कृपा, उनके प्रकाश की धार (फ़ैज़) का अपने ऊपर अनुभव करते रहो। यही सत्संग है।

**(परमपूज्य दादा गुरुदेव, परमसंत महात्मा डॉ. श्रीकृष्ण लालजी महाराज)**

# ''सच्चे मोती''

(देन – पू. गुरुदेव की – स्वांति नक्षत्र में)

- हमारे सभी दु:खों की जड़ इच्छायें हैं, कामनायें हैं। संसार की नश्वरता को समझें, सुख–दु:ख से ऊपर उठते जायेंगे।
- यदि हमेशा–हमेशा का सुख और हमेशा का आनन्द पाना चाहते हैं तो अपने आपको पहचाने और दुनियां की निस्सारता को समझते हुए निर्लिप्त रहें फंसे नहीं। कर्तव्य पूरे करें सेवा समझ कर।
- हर व्यक्ति अपने–अपने संस्कार लेकर आता है निर्भर करता है कि वर्तमान जीवन कैसे गुजारता है कुछ लोग और फंसते जाते हैं, जो समझदार होते हैं। किसी संत सद्गुरु की शरण पकड़ लेते हैं वे न सिर्फ अपने पुराने संस्कार ज्ञान से या धर्म के सहारे काट लेते हैं वरन् आगे के लिए और संस्कार बनने भी नहीं देते! वे दुनियाँ को ईश्वर की मानकर सेवा के रूप में भोगते हैं मालिक बनकर लिप्त नहीं होते।
- जब एक दिन इस दुनियां को छोड़ना ही है तो फिर इससे मोह कैसा? सराय में राहगीर की तरह अपना वक्त गुजारें, फंसे नहीं।
- परेशान या दु:खी न हुआ करें एक दिन तो सब छूटना ही है तो फिर तमाशा देखें जिसकी दुनियाँ वो जाने। ईश्वर द्वारा दी गई जिम्मेवारियाँ पूरी करते हुए पिछले संस्कार काटते चलें और आगे के लिए हर वक्त यह याद रखें कि सब कुछ छूटने वाला है।
- संन्यास से पहले वानप्रस्थ को समझना होगा। वास्तविक संन्यास है अनासक्त हो जाना।



# करतार सन्देश

(प्रेम, सेवा, सदाचार की परमार्थिक पत्रिका)

अंक- एकादश अप्रैल - 2018 वर्ष-पंचम

रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर

# अनुक्रमणिका


| क्र. | विषय | पृष्ठांक |
|---|---|---|
| 1. | धारे सरणे आयो जी | 01 |
| 2. | नेमतें ● परदादा गुरुदेव की जुबाने मुबारिक़ से | 02 |
| 3. | अमृत–वर्षा ● दादा गुरुदेव के मुखारबिन्द से | 03 |
| 4. | करतार–धारा ● गुरूदेव ने कहा था | 04 |
| 5. | अमृत–कणिकाऐं ● एक अकिंचन | 05 |
| 6. | हमारे हुजूर महाराज ● हुजूर महाराज के परम शिष्य | 06 |
| 7. | भण्डारे की सूचना | 08 |
| 8. | इरशादात ● संगत का फल | 09 |
| 9. | वचन ● संतो का तरीक़ा | 13 |
| 10. | अमृतवाणी ● गुणों को अपनायें | 19 |
| 11. | गुरू–प्रसादी ● विचारों को शुद्ध करें | 23 |
| 12. | बातें आत्मानुभव की – चुनौतियाँ और बाधायें | 28 |
| 13. | डायरी के पन्नों से ● द्वारा पूज्य गुरुदेव | 29 |
| 14. | सच्चे मोती ● देन पूज्य गुरुदेव की | 30 |



:: एकल स्वामित्व ::

मुद्रक एवं प्रकाशक : **राजीव जौहरी**

सम्पादक : **शुभांष जौहरी**

सह–सम्पादक : **संजय कुमार गुप्ता**

35, खेड़ापति कॉलोनी, ग्वालियर (म.प्र.)

web: ramashramsatsanga.com

f : Karter Dhara "A Spirtual Page from ramashram satsang reg. gwalior

सर्वाधिकार सुरक्षित

मासिक पत्रिका, अंक–एकादश, अप्रैल – 2018, वर्ष–पंचम, 1000 प्रतियाँ

वार्षिक सदस्यता शुल्क मात्र रु. 175/– सात वर्षीय सदस्यता शुल्क मात्र रु. 1100/–

(RNI Reg. No. MPHIL/2013/50719)

(Title Code : MPHIN29079)

:: प्राप्ति स्थान ::

**प्रबन्धक, करतार सन्देश**

35, खेड़ापति कॉलोनी, ग्वालियर (म.प्र.)

**Mob.: 09971368369**





ॐ

# करतार सन्देश

**(प्रेम, सेवा, सदाचार की परमार्थिक पत्रिका)**

संरक्षक अधिष्ठाता – परमसंत पूज्य डॉ. करतार सिंह जी साहिब

संरक्षक – अध्यक्ष एवं सर्वोच्च आचार्य रामाश्रम सत्संग (रजि.), ग्वालियर

**अंक एकादश - मासिक पत्रिका (अप्रैल 2018) वर्ष-पंचम**


## "थारे सरणे आयो जी"

नाथ! थारे सरणे आयो जी ॥–॥
जचे जिसतरां, खेल खिलाओ, थे मन चायो जी।
बोझो सभी उतरयो मनको, दुख बिनसायो जी,
चिन्ता मिटा, बड़े चरणों को सहारो पायो जी।
सोच फिकर अब सारो थारे ऊपर आयो जी,
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अन्तर हरखायो जी।
जस अपजस सब थारो, 'रसी' दास कहायो जी,
मन भँवो थारे चरण कमल में जा लिपटायो जी।

पवित्र ईस्टर की बधाईयाँ प्रभु यीशू की प्रेम प्रसादी से सभी मालामाल हों, परस्पर भाईचारा बढ़े।

दीनतापूर्वक सभी के चरणों में कोटि–कोटि नमन, प्रणाम, धन्यवाद!

# ''नेमतें''

(परदादा गुरुदेव, जनाब लालाजी साहिब की जुबाने मुबारिक़ से....)

- शब्द महात्म – शब्द चेतन्य को प्रगट करता है, यह जानों की जान प्राणों के प्राण और सबके अस्तित्व का आधार है। इसी पर सारा जगत ठहरा हुआ है। यही कूटस्थ अधिष्ठान का आधार मात्र है। यही चौथी अवस्था है, हर स्थान में स्पन्दन प्रकाश या शब्द की धार है। यही शब्द चक्कर खाने वाली आदि माया की नाल भंवर गुफा में घूम रहा है, यही महाकाल है, यह शब्द नीचे उतरकर पारब्रह्म, ब्रह्म, शुद्ध ब्रह्म, सबल ब्रह्म, ईश्वर परमेश्वर, शेव महाशेव, ब्रह्मा–विष्णु आदि बताता है, यही देवोंदेव हैं, यही माया देश में जीव जन्तु, कीड़े–मकौड़े आदि भी हैं।
- 1. दयाल देश – जहाँ आधार मात्र निश्चल कूटस्थ अवस्था है।
- 2. महाकाल देश – इसके अन्तर्गत कारण, सूक्ष्म और स्थूल मण्डल भी हैं जो ब्रह्मलोक और पार ब्रह्मलोक आदि कहलाते हैं। उमाया देश जहाँ केवल स्थूल क्षेत्र हैं। माया के मेल से शब्द भी स्थूल रूप में काम करता है। इसमें भी कुछ आन्तरिक पाताल का हाल भी हैं, जो वर्णन करना चाहिये बिना सतवचन उपासना के मुश्किल से समझ में आता है।
- राज़ी उसमें हम हैं, जो रज़ा उसकी है। तसलीम व रज़ा ही आला शांति है।
- पंच छकार से युक्त होना चाहिए – (1) छड़ी, (2) छाता (3) छल्ला, (4) छदाम पैसा (5) छागल (पानी)
- नीचे दी बातों का ख्याल रखने से आत्मिक लगन में अधिक लाभ ठीक पहुँचता है – (1) मालिक की याद व उसके सुमिरन (ज़िक्रेइलाही से)। (2) मुक्ताहार विहार (आदायें हक़ेनफ़्स) से अर्थात् जो कुदरत एखलाकन और धर्मानुसार बातें करना वह की जावें। मन, काम, क्रोध मोह लोभ के बस में होकर ज़रूरत के ख़िलाफ करे या करावे उसमें मन को रोके व साधें (3) खूब ठीक–ठीक और पेट भर कर भोजन करने से (4) धर्मशास्त्र के अनुसार कर्म करने से।





# ''अमृत वर्षा''

(पूज्य दादा गुरुदेव के मुखारबिन्द से ....)

- असली आनन्द तो आत्मा में है, न कि विषयों में या दुनियाँ में। जब ज्ञान द्वारा यह भ्रांति छूट जाती है तब मालूम पड़ता है कि, आनन्द तो आत्मा में ही है अन्य वस्तुओं में नहीं।
- ख्याल से ही हम भ्रांति में फंसे हैं, ख्याल से ही हम छूटेंगे! यह सारी दुनियाँ ख्याल से ही बनी है, और ख्याल से ही छूटेगी भी, इसलिये सतगुरु का ख्याल बांधकर इन सभी सांसारिक वासनाओं और भोगों को काटते जाओ यही, सबसे नज़दीक रास्ता ईश्वर को पाने का है।
- इन्सानी ज़िन्दगी का आदर्श यह है कि अपने आपको पहिचाने कि, मैं क्या हूँ, ईश्वर को पहिचाने और उसमें अपनी हस्ती लय कर दे, जो इस आदर्श का रास्ता दिखलायें वही सच्चा आध्यात्म है, जिसने इस आदर्श की प्राप्ति कर ली है, वही सच्चा गुरु है, जो इस आदर्श की प्राप्ति करना चाहता है वही सच्चा भक्त है।
- जब ऐसा शिष्य हों, ऐसा गुरु हो – ''दुनियाँ में किसी भी चीज़ की ख्वाहिश न रखने वाला चाहे वो कितनी भी अनमोल क्यूं न हो, तभी सच्चे लक्ष्य की प्राप्ति मुमकिन है वरना नहीं।
- गुरु में कितनी विद्या क्यूं न हो, कितना ही ज्ञान क्यूं न हो, कितनी ही शक्ति क्यूं न हो, अगर उसने आपको ईश्वर को समर्पण नहीं किया है और ख़ुदी अपने (अहंपन) बाकी है तो वह सच्चा गुरु नहीं है।
- पूर्ण समर्पित अधिकारी शिष्य हो और ईश्वर में समर्पित पूर्ण गुरु मिल जाये तभी ईश्वर के दर्शन होते हैं।

# ''करतार-धारा''

(पूज्य गुरुदेव, ने कहा था....)

- साधक के मन में जब वैराग उत्पन्न हो जाता है कि मैं किस कीचड़ में फंस गया हूँ तब उसमें परमात्मा को पाने की सच्ची जिज्ञासा उत्पन्न होती है।
- जब तक व्यक्ति दीनता को नहीं अपनाता, संसार से उपराम नहीं होता तब तक उसमें समर्पण भाव नहीं आता, तब तक वह शरणागत नहीं होता।
- यह संसार प्रपन्चों का है, एक ओर हमारी खूब उपमा–प्रशंसा होती है, वो भी कीचड़ में फंसाती है, और दूसरी ओर हमारी बदनामी – निंदा भी होती है, वो भी दुखदायक है।
- हमें द्वंदों को छोड़कर आत्मस्थित हो निष्काम भाव से यज्ञ समझकर सबकी सेवा करनी चाहिए। यज्ञ में दी गई आहुति अग्नि रूप हो जाती है, इसी प्रकार हमें अपने कर्मों को बिना किसी आशा इच्छा के सेवा रूपी यज्ञ में आहुत करना होगा।
- जब व्यक्ति संसार की ठोकरें खाकर थक जाता है, तब परमात्मा की कृपा से सत् बुद्ध पैदा होती है अन्यथा आदमी कितना ही बड़ा हो जाय वह कीचड़ में ही फँसा रहता है, आशा–निराशा, इच्छायें, क्रोध आदि सबमें लिप्त रहता है, बुद्धि का, स्मृति का नाश हो जाता है।
- स्मृति क्या है? कि मैं तो आत्मा हूँ, परमात्मा का अंश हूँ। ये दु:ख–सुख किसको होता है – ये उत्तेजना किसको मिलती है संसारी वस्तुएँ क्या हैं, इनकी कीमत क्या है? हम उस समय भूल जाते हैं कि ये सब असार है। फलत: आत्ममय बुद्धि का नाश होने से परमार्थ नष्ट हो जाता है।





# ''अमृत–कणिकाऐं''

(द्वारा एक अकिंचन....)

- संत के सत्संग से जीव को आत्मा–परमात्मा के असल रिश्ते का ज्ञान होता है। साथ ही शरीर, संसार और समस्त सांसारिक रिश्तों का वास्तविक ज्ञान होता है।
- सच्चा सत्संग यह है कि ईश्वर–कृपा या गुरु–कृपा महसूस होने लगे और उसके प्रभाव से चाहे थोड़े समय के लिए ही सही वास्तव में सत् का संग अर्थात आत्मा का परमात्मा से योग हो इस हालत में प्रमुख रूकावट मन, पूर्णत: शांत रहता है आत्मा प्रकाशित होती है और सर्वव्यापी परमात्मा से योग होता है।
- हमारे रास्ते की प्रमुख रुकावट हमारा अहंकार है। इसका नाश होते ही ईश्वर कृपा जो हर वक्त हो रही है महसूस होने लगती है। जब तक दो होने का भान है अर्थात् बीच में अहंकार की दीवार खड़ी है तब ही तक रुकावट है इस दीवार के गिरते ही दुई मिट जाती है। इसके लिए आवश्यक है दीनता को धारण किया जाये। तम से रज और रज से सत् पर आकर आत्मिकता में प्रवेश किया जाये और यह संभव है किसी सच्चे संत सद्गुरु की कृपा और उनके सत्संग से।
- एक सत्संगी का व्यवहार सत् का व्यवहार होना चाहिये। कम से कम इतना तो अवश्य ध्यान दें कि दूसरे से अपने प्रति अनापेक्षित व्यवहार हम भी दूसरे से न करें। प्रयास रहे कि मधुरवाणी के साथ–साथ मितभाषी बनें। अनावश्यक अधिक बोलने वाला व्यक्ति अनर्गल बातें करता है त्रुटियाँ कर बैठता है।
- अनावश्यक रूप से किसी की बातों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ऐसा करने से हम ऐसे कर्म बंधन में भी फंस जाते हैं जिनसे हमारा कुछ लेना देना नहीं, हर व्यक्ति स्वभाव एवं व्यवहार उसके संस्कारों के मुताबिक होता है।

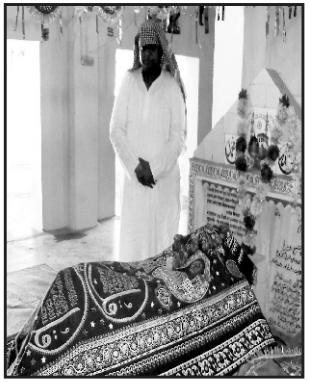

# ''हमारे हुज़ूर महाराज''

## परमसंत मौ. फ़ज़्ल अहमद खां साहब

*(अवतरण 1857 - निर्वाण 1907)*

या इलाही तीरे वहदत से मुझे मज़रूह कर।
फ़ज़्ल अहमद खां फ़कीरे बेनबा के वास्ते॥

## ''हुज़ूर महाराज के परम शिष्य'' महात्मा रामचन्द्र जी महाराज तथा महात्मा रघुबर दयाल जी महाराज

विद्यार्थी जीवन में जिस मकान में ज़नाब लालाजी साहिब व पूज्य चाचा जी रहते थे वह बहुत छोटा था। अतः जनाब लालाजी साहिब ने अपने पढ़ने के लिए मुफ़्ती साहिब के मदरसे में एक कोठरी किराये पर ले ली थी। उस कोठरी के बगल में ही दूसरी कोठरी में एक मुसलमान मौलवी साहिब रहते थे जो लकड़ों को प्राइवेट रूप में पढ़ाया करते थे। कुछ वर्षों तक वह मिशन स्कूल में उर्दू, फारसी के शिक्षक के रूप में कार्य भी करते रहे। जनाब लालाजी साहिब कभी-कभी पढ़ाई की मुश्किलों को दूर करने के लिए मौलवी साहिब के पास चले जाते थे और मौलवी साहिब बड़ी खुशी और मुहब्बत से उनकी पढ़ाई की कठिनाइयों को दूर कर देते थे। जनाब लालाजी साहिब को उनकी सोहब्बत में एक खास आनन्द मिलता था। परन्तु वह इस बात से वाक़िफ नहीं थे कि मौलवी साहिब एक पूर्ण समर्थ सन्त तथा अध्यात्म के समुद्र हैं। उनके साथ कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हुईं, जिनका वर्णन





पिछले अध्यायों में किया जा चुका है, कि उनका हुज़ूर महाराज के प्रति श्रद्धा और आत्मिक प्रेम दिनोंदिन प्रगाढ़ होता गया। अन्ततोगत्वा वह महान शुभ अवसर आ गया जब जनाब लालाजी साहिब उनकी विशाल तथा अति शक्तिशाली आध्यात्मिक चेतना के प्रभाव क्षेत्र में पूर्ण रूप से समाविष्ट हो गये। इस महत्त्व घटना का वर्णन भी इस ग्रन्थ के पिछले पृष्ठों में किया जा चुका है।

आठवीं कक्षा तक स्कूल शिक्षा प्राप्त करने के बाद ज़नाब लालाजी साहिब का विवाह एक अच्छे खानदान में कर दिया गया। शादी के थोड़े दिनों बाद ही उनके पिताजी का स्वर्गवास हो गया। यद्यपि काफी बड़ी जायदाद उनके पिताजी ने अपने जीवनकाल में बेच दी थी फिर भी कुछ बाकी रह गई थी। लेकिन दुर्भाग्यवश एक मुकदमा राजा मैनपुरी से जायदाद के विषय में छिड़ गया। बहुत समय तक मुकदमा चलता रहा और अन्त में फैसला राजा मैनपुरी के पक्ष में हुआ। एक बड़ी रकम की डिग्री जनाब लाल जी साहिब पर हुई और दो गाँव हाथ से निकल गये। डिग्री की अदायगी में मकान तथा तमाम गहने बिक गये और उनको अपना निजी मकान छोड़कर एक छोटे से किराये के मकान में रहना पड़ा। उन्हीं दिनों में जनाब लालाजी साहिब के चचेरे भाई जिनको उनके पिताजी ने बहुत समय तक कोई सन्तान न होने के कारण गोद ले लिया था, का स्वर्गवास हो गया। वही पूज्य पिताजी के निधन के बाद पूरे परिवार की देखभाल करते थे। उनके स्वर्गवास के बाद पूरे परिवार का बोझ लालाजी साहिब पर आ पड़ा। आमदानी का कोई ज़रिया न रह गया। आर्थिक स्थिति बिगड़ी चली गई।

फतेहगढ़ के कलेक्टर साहब आपके पिताजी से पूर्व परिचित थे। उन पर बहुत मेहरबान रहते थे। जब उनको उनके परिवार की इस दयनीय दशा की जानकारी हुई तो उन्होंने जनाब लालाजी साहिब को

कलेक्टरी फतेहगढ़ में पेड अप्रेन्टिस के पद पर दस रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त कर दिया तथा कुछ दिनों बाद कलेक्टर साहब ने चच्चा जी जी महाराज की नौकरी के लिए रेल्वे विभाग में सिफारिश कर दी। पूज्य चच्चाजी सहायक स्टेशन मास्टर के पद पर नियुक्त हो गये। परन्तु उन्होंने एक अंग्रेज अफसर जो अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से अशिष्टता का व्यवहार करता था, झगड़ा हो जाने के कारण अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसके बाद चच्चा जी महाराज ने जीवन पर्यन्त कोई नौकरी नहीं की। जीवकोपार्जन के लिए कचहरी में नकल नवीसी व मुहर्ररी का कार्य कुछ समय तक करते रहे।

**रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर**

**सालाना जलसा**

**(वार्षिक भण्डारा)**

हमारे संरक्षक अधिष्ठाता परमपूज्य गुरुदेव प्रातः स्मरणीय **परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहिब** की शान में छठवां ''सालाना जलसा'' (अवतरण भण्डारा) दिनांक 13, 14 एवं 15 (बुध, गुरु एवं शुक्रवार) जून 2018 को ''गीता भवन'', जैन मंदिर के पास, गुढ़ा–गुढ़ी का नाका, कम्पू, लश्कर, ग्वालियर में आयोजित होगा।

कृपया सपरिवार सम्मिलित होकर फैज़याब (लाभान्वित) हों।

आगन्तुकों की पूर्व सूचना सुचारू–व्यवस्था संचालन में सहायक होगी। (गीता भवन 12 जून से आरक्षित है)।

शुभकामनाओं सहित
मंत्री रामाश्रम सत्संग (रजि.) ग्वालियर
Mob. 09910378038, 09971368369





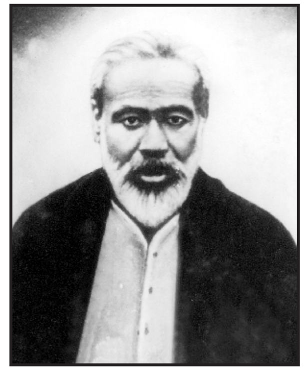

# ''इरशादात''

(जनाब लालाजी साहिब)

*समर्थगुरु महात्मा रामचन्द्र जी महाराज*

( अवतरण 2-02-1873, निर्वाण 14-08-1931 )

या इलाही फ़ज़ल से दे मुझको, फ़ज़्ले अहमदी!
''राम'' फ़ज़्ली और ''रघुवर'' बाअता के वास्ते!!

## *''संगत का फल''*

**संगत का फल :–** जैसे कोई ताकतवर जालिम कमज़ोरों को मज़बूर करता है और सताता है उसी तरह पर काल यानी शैतान उन लोगों को जिनका दिल और कुव्वत इरादी कमज़ोर है, सताता है और बुराईयों के करने पर मज़बूर करता है और जिनके दिल मज़बूत होते हैं उनको तंग नहीं करता। दिल योग, अभ्यास और गुरू के सच्चे प्रेम और अच्छे आदमियों की संगत में मज़बूत बनता है, अच्छे किस्सों या लतीफों या किताबों के असर से भी अच्छी संगत का सा होकर शुद्ध ख़यालात पैदा होते हैं, तब पवित्र कर्म बनते हैं, जिनसे दिल और कुव्वत इरादी (इच्छा शक्ति) मज़बूत हो जाते हैं। बरख़िलाफ़ इसके, खराब किस्सों या लतीफ़ों या किताबों से बुरी संगत का सा असर होकर नाक़िस (दूषित) ख़याल पैदा होते हैं तब बुरे कर्म बनते हैं जिनसे दिल और क़ुव्वत इरादी उसके कमज़ोर हो जाते हैं।

**हिदायत :–** अभ्यासी को चाहिये कि बहस मुबाहिसा (तर्क–वितर्क) में और ज़्यादा यज्ञ वग़ैरा के करने में वक्त न लगावें। अलबत्ता चन्द रोज जप प्रार्थनाा खूब करें, फिर रात दिन लय अवस्था की कोशिश करता रहे तो उस दयाल की शक्ति की मदद, उसको खुदी यानी अहमपने से निकालकर अव्वलन (सबसे पहिले) लय अवस्था में और फिर स्थिति और परम स्थिति की हद में पहुँचा देगी। तब उसको सबके गुण मालूम होंगे और वह प्रत्यक्ष देखेगा कि इस दुनिया में जितने काम हो रहे हैं उसकी जात से हो रहे हैं।

जिस तरह सीढ़ी के ज़रिये आदमी बुलन्दी पर चढ़ जाता है उसी तरह गुरू मुर्शिद की मदद मुरीद को रूहानी तरक्की के मुक़ाम पर पहुँचाती है और जिस तरह सीढ़ी के डन्डे पर अहतियात से कदम रखने से ही इन्सान ऊपर जाता है उसी तरह मुर्शिद के अह्काम (आज्ञायें, आदेश) की बख़ूबी तालीम करने और उससे मुहब्बत करने पर मुरीद तरक्की की मंजिल पर पहुँच जाता है और जिस तरह सीढ़ी के डन्डे पर लापरवागी से औंधा टेढ़ा कदम रखने से गिरने का अन्देशा रहता है उसी तरह मुर्शिद के अह्काम के बहाने से जो बेकायदा और नामुनासिब हरकत की जाती है, उससे इन्सान इन्सानी दर्जा से भी गिर जाता है। बस हर हालत में मुर्शिद के अदब लिहाज़ और कायदा की पाबन्दी ज़रूरी चीज़ है.

अक्सर आदमी ख़याल करते हैं कि परमात्मा हमारे अफ़आल के मुताबिक हमको सुख–दुख देता है इसलिये उसकी भक्ति और इबादत करने की क्या ज़रूरत है मगर यह सख़्त गलती है। बात यह है कि हमको आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक तीन प्रकार के दु:ख होते हैं। जो हमारे ख़यालात से और दीगर जानदारों से और कुदरती असबाब से हमको मिलते हैं, उनका असर हमारे स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर पर यानी जिस्म और मन और माया से लिपटी हुई हमारी आत्मा पर होता है। उनके नाम शारीरिक व मानसिक व आत्मिक हैं। आत्मिक तक़्लीफ़ व वज़ह उन पर्दों के जो हमारी आत्मा और मन पर पड़े हुये हैं – हमको फौरन मालूम नहीं होते हैं और मन को अगर शारीरिक सुख–दुख का ध्यान न आवे और उन पर ख़याल न जमायें तो वे भी मालूम नहीं होते या निहायत कम मालूम होते हैं। लेकिन मानसिक तक़्लीफ ऐसी ज़बरदस्त होती है कि बहुत दिक़ (परेशान) करती है। इसी तरह आधिदैविक और आधिभौतिक तक़्लीफ़ पर अगर हम ध्यान (ख़याल) न जमावें तो वे बराए नाम रह जाती है। आध्यात्मिक तक़्लीफ़ जो ख़ुद हमारी बनाई हुई है, उनका हटाना बहुत दुश्वार काम है। पस मालूम हुआ कि आध्यात्मिक तक़्लीफ जो मानसिक जरिये से पैदा हो उनसे पीछा छुड़ाना बेहद दुश्वार काम है और शौक के साथ किसी फ़ेल की मश्शाक़ी से मन सुख मानता है और उस पर से





ख़याल की धार के हटने से मन दुख मानता है, यानी किसी ऐसी शै से जो अव्वलन (पहले–पहल) बहुत पसन्द होती है सीर (पूरा) हो जाने से नफ़रत हो जाती है या अगर कोई चीज़ जिसका हमको शौक है नहीं मिले या मिलकर जाया हो जाय तो उसका रंज होता है और कोई शै ऐसी है ही नहीं जिससे कभी सीर न हो या जो ज़रूर ही मिल जाय या कभी उसका नाश ही न हो। इसीलिये हर दुनियावी ख़्वाहिश का नतीज़ा आख़िर दुखदाई होता है। अल्बत्ता भगवान् का प्रेम ऐसा है जो ला–जवाब है और ख़याल की धार उससे हटानी नहीं पड़ती है। पस भगवान् की भक्ति यानी उससे प्रेम, भगवान् के खुश करने के लिये नहीं है बल्कि ऐसे अनन्त सुख और आनन्द की प्राप्ति के लिये है जो उससे खुद व खुद हासिल होता है।

बाज आदमी ज़मीन की जोतकर उससे गल्ला पैदा करता है और बाज आदमी गल्ला की मण्डी यानी गल्ला के बाज़ार को या गल्ला उठने के बाद गल्ला डालने की जगह को बुहार कर कूड़े को छानकर और साफ़ करके उसमें से गल्ला निकाल लेते हैं। बहरहाल गल्ला दोनों को मिलता है और मगर आसानी या दुश्वारी और जल्दी या देर और कम या ज़्यादा नफ़ा का फ़र्क रहता है। इसी तरह रूहानी तरक्की के लिये बाद आदमी जप, तप पूजापाठ, हठहोग के कर्म और तीर्थ, व्रत वग़ैरा करते हैं कम या वेश आत्मिक या दुश्वारी का और जल्दी या देर का फ़र्क रहता है। पस जो जिसके पसन्द आवे वह करे।

हर शख़्स चाहता है कि हमारे काम कम मेहनत और कम वक्त में पूरे हो जावें। इसी मिसाल से रोज़ व रोज़ चीज़ों में मांही तरक्की हो रही है। उन चीज़ों के ईज़ाद करने में दिमागी व जिस्मानी मेहनत करनी पड़ती है और लोग उसकी मेहनत देकर उससे फायदा उठाते हैं, उनको खुद तैयार नहीं करना पड़ता। लेकिन आत्मिक उन्नति बिला अपनी जातीय मेहनत के हासिल नहीं होती। इसके कुछ सामान सतगुरु से भी मिलते हैं यह उनकी मुहब्बत, इन्किसारी (विनम्रता) और सच्चा प्रेम है। नकदी या सामान या जिस्मानी मेहनत से उनकी खिदमत करना, यह चीजें असली मुहब्बत नही

है लेकिन ताहम (फिर भी) खुद भी कुछ करना पड़ता है। अल्बत्ता अपनी इन्किसारी और सच्चे प्रेम से जिस कदर सामान सतगुरु से ज़्यादा ले लेगा उसी कदर ख़ुद कम करना पड़ेगा मगर फिर भी बिला अपने कुछ काम नहीं बनता है।

**पीरान नमी परन्द मुरीदान भी बराशुद के मानी :–** 1. तमोगुण– मुर्शिद की तारीफ़ जा बजा करना। 2. रजोगुणी – मुर्शिद की इस कदर खिदमत और फ़र्मांबरदारी करना कि दूसरों को भी उनके ऐसा ख़याल पैदा हो। 3. सतोगुणी – अपने अफाल व अह्वाल (हालात) ऐसे आला कर लेना कि जिस कदर मुर्शिद का नाम रोशन हो।

**उपदेश वचन :–** बाज कहते हैं कि सच बोलना, ब्रह्मचर्य आदि से ही रूहानी तरक्की होती है, बाज कहते हैं, भगवान् को याद रखने से ही रूहानी तरक्की होती हैं, बाज कहते हैं कि शब्द अभ्यास से ही रूहानी तरक्की होती है, और बाज इल्म से, बाज परोपकार से, बाज बुजुर्गों की खिदमत करने से रूहानी तरक्की होना बतलाते हैं। दरअसल जुम्ला (समस्त) उम्दा कर्म रूहानी तरक्की होने के मददगार हैं बल्कि हर किस्म के उम्दा कर्म करने से रूहानी तरक्की हासिल होती है। यानी जैसे कि एक ताली बेइल्म चन्द मज़ामीन (लेख–समूह) में पास होने पर पास जाना जाता है या जैसे मरीज़ दवा खाये, परहेज़ करे और उसके मुतल्लिक हर किस्म की एहतियात करने से ही तंदुरुस्त बनता है। उसी तरह हर किस्म के उम्दा अफाल करने और खराब अफाल को तर्क करने से ही पूरी रूहानी तरक्की होती है। अल्बत्ता अगर कोई मरीज़ चाहता है कि शफ़ाखाने में दाखिल होकर वहाँ के मुआलिज (चिकित्सक) और तीमारदारान (रोगी की शुश्रुषा करने वाले) पर ही खबरगीरी (देख–रेख, रक्षा) का सारा भार डाल दें तो सिर्फ़ गुरु दयाल का सहारा ले लें लेकिन तब उनके हुक्म के क़तई खिलाफ़ वरज़ी न करें और श्रद्धा विश्वास के साथ पूरी तालीम हुक्म की करें तो वे खुद ही कुल इन्तजाम करेंगे।





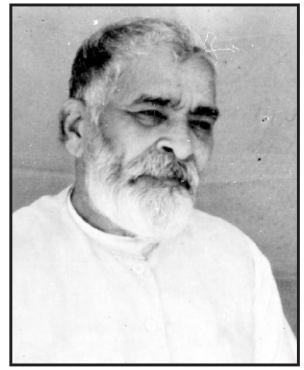

# "वचन"

*परमसंत डॉ. श्रीकृष्णलाल जी साहिब*

( अवतरण 15-10-1894, निर्वाण 18-05-1970 )

पीर से उल्फ़त हो मुझको, और बनूं उनकी मुराद।
'राम' के 'श्रीकृष्ण' की, अनुपम दया के वास्ते॥

## *"सन्तों का तरीक़ा"*

**आदमी की ज़िन्दगी का आदर्श है कि वह साँसारिक व्यवहारों को और कर्त्तव्यों को धर्मशास्त्र के अनुसार पूरा करते हुए ईश्वर को प्राप्त कर ले। इसका सबसे सरल साधन सन्त–मत में है। इसमें फायदा यह है कि पिछले संस्कार आसानी से कट जाते हैं, आगे के लिए उनका सिलसिला खतम कर दिया जाता है और गुरु कृपा व उनके सत्संग से आत्मा शुद्ध और निर्लेप होकर अपने अंशी परमात्मा में लीन हो जाती है। जो तरीका इस अभ्यास को बताता है उसी को 'सन्त मत' कहते हैं और उसमें दूसरे मतों के मुकाबले में बहुत सी सुविधायें और विशेषतायें हैं।**

(1) सन्तों का तरीक़ा सारे संसार में एक ही है चाहे वह कोई भी धर्म हो। युगानयुग से एक ही साधन चला आ रहा है और वह है 'गुरु चरणों में सच्चा प्रेम और समर्पण'। **फकीरों का तरीका प्रेम का तरीका है और यह रास्ता ईश्वर की प्राप्ति के लिए सबसे सरल और सबसे छोटा है। प्रत्येक जीव में आत्मा है, वह परमात्मा का अंश है। आत्मा को परमात्मा से कुदरती (स्वाभाविक) प्रेम है। वह उससे मिलकर एक हो जाना चाहती है। परन्तु जन्म जन्मान्तर की इच्छाओं, वासनाओं और शुभाशुभ कर्मों के कारण संस्कारों की एक गाँठ बन गई है जिसे 'मन' कहते हैं। यही पर्दा है**

**जो आत्मा और परमात्मा के बीच में बाधक है और दोनों का योग नहीं होने देता। सन्त उस गांठ को गुरु मत में अपनी कृपा से खोल देता है। आत्मा और परमात्मा के बीच का पर्दा हट जाता है और दोनों मिलकर एक हो जाते हैं। यही मनुष्य की.जिन्दगी का आदर्श है।**

हमारे यहाँ सन्त मत में 'गुरु' शब्द दो तरह से प्रयोग होता है। गुरु नाम है उस आदि शक्ति का जो तमाम दुनिया का आधार है, जो एक है, जो न कभी पैदा होता है और न कभी मरता है, हमेशा से है और हमेशा रहेगा। वही अमर आनन्द, अमर शान्ति और अमर जीवन का स्रोत है। सब स्थावर जंगम और चराचर उसी से उत्पन्न होते हैं और उसी में समा जाते हैं। जीवों के उद्धार के लिए वह संत रूप में अवतरित होता है और उन्हीं की सरल भाषा में उन्हें समझाता है, रास्ता दिखाता है और उनके मन की गांठ खोलकर उन्हें परमात्मा की प्राप्ति कर देता है। दूसरे लोग वे हैं जो गुरु के जीवन काल में उसके सम्पूर्ण शरणागत होकर अभ्यास करते–करते परमात्मा तक पहुँच जाते हैं। ये लोग भी सन्त और गुरु कहलाते हैं और जीवों के उद्धार का काम जो सन्तमत का मिशन है जारी रखते हैं।

(2) इसकी दूसरी विशेषता यह है कि इसमें केवल 'एक' परमात्मा को मानते हैं। देवी देवाताओं की पूजा नहीं होती लेकिन उनका निरादर भी नहीं होता। साँसारिक व्यवहार, धर्म नीति आदि पर धर्मशास्त्र के अनुसार चलना सिखाते हुए ईश्वर की प्राप्ति का तरीक़ा और अभ्यास बताते हैं।

(3) कोई भेदभाव हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई और ऊंच–नीच का नहीं है। जो सन्त–मत के रास्ते पर चलेगा वह ईश्वर तक पहुँच सकता है। इसका साधन करके इस दुनिया में खुशी प्राप्त करता है और आवागमन के चक्र से हमेशा के लिए छूट जाता है।

(4) इसमें किसी के लिए रुकावट नहीं है। दस वर्ष के बच्चे से लेकर बूढ़े, स्त्रियाँ, बीमार सभी इसका साधन कर सकते हैं। इसमें कोई धर्म, गृहस्थ और सांसारिक व्यवहार नहीं छुड़ाते। छुड़ाते समय उन बातों को हैं जो तुम्हें ईश्वर से दूर ले जाती हैं। इसमें यह बताते हैं कि अपनी





रहनी–सहनी ठीक करो, अपना आचरण शुद्ध करो, धर्म पर चलो और नेक बनो। इसमें कौए भी हंस बन जाते हैं, यानी बुरे से बुरा आदमी भी अच्छा बन जाता है।

(5) जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसमें देवताओं और अवतारों की पूजा नहीं करते। वे अपने लोक तक ही पहुँचा सकते हैं। भगवान् कृष्ण और भगवान् राम कुछ कलायें लेकर अवतरित हुए। सम्पूर्ण कलायें लेकर तो कोई भी अवतरित नहीं हुआ। यहाँ उस आदि शक्ति की उपासना की जाती है जो सम्पूर्ण कलाओं का स्रोत है और सबसे परे है। एक है ईश्वर और एक है परमेश्वर। ईश्वर केवल एक ब्रह्माण्ड का मालिक होता है और परमेश्वर सारे ब्रह्माण्डों का मालिक होता है। सूफ़ियों में एक को खुदा और दूसरे को खुदा–ए–अज़ीम कहते हैं।

(6) मनुष्य सृष्टि का एक अंग है और सृष्टि के परमात्मा ने नियम बना दिये हैं। उन नियमों पर चलो। जिस समाज के तुम अंग हो और जिस धर्म **(Religion)** में तुम पैदा हुए है उसके नियमों पर चलो। यहाँ यह तो सब बताया ही जाता है परन्तु यहाँ सच्ची शिक्षा इस बात की दी जाती है कि परमेश्वर से मिलकर अपनी हस्ती (आपा) को मेट दो।

(7) और मतों का ख़तम **(Last)** यह है कि नेकी पर चलो लेकिन हमारे यहाँ यहाँ से शुरू कराते हैं।

(8) सन्ध्या पूजा क्या है? अपनी शक्ति को एकाग्र करना हमारी इच्छा शक्ति जन्म–जन्मान्तर से कमज़ोर होती चली आ रही है। ऐसे बहुत से लोग हैं जो यह अच्छी तरह जानते हैं कि बुरा क्या है, भला क्या है, लेकिन फिर भी बुराई कर जाते हैं। जब–जह मन बुराई की तरफ़ जाय तब अपनी इच्छा शक्ति को एकाग्र करके उसे सच्चाई पर लाओ। जब जब मन दुनिया में फंसा उसे वहाँ से निकाल कर परमात्मा के चरणों में लगाओ।

(9) **असली अभ्यास यह है कि अपने विचारों पर निगाह रखो, उन्हें बुराई से खींचकर भलाई पर लाओ।**

(10) सन्त मत में एक विशेषता यह है कि और तरीकों में तो गुरु शिष्य को अभ्यास बताकर छोड़ देते हैं मगर यहाँ यह नहीं है। सन्त मत में गुरु कृपा परछाँई की तरह सदा साथ रहती है और गुरु अपनी इच्छा शक्ति से शिष्य को अभ्यास में मदद देते हैं।

मनुष्य का मन मोम की तरह है। हर छाप **(Impression)** लेता है। आत्मा उससे दबी हुई है। अपने असली घर को भूल गई है। परमात्मा जो उसका प्रीतम है उससे बिछुड़ गई है। मन दुनिया के भोगों में फँसा है और आत्मा उसके साथ क़ैद हो गयी है। अपनी असली रूप सत् चित् आनन्द भूल गयी है। मालिक थी, नौकर बन गई। होना तो यह चाहिये था कि मन को जो उसका नौकर है, अपने कहने में चलाये। हो गया उल्टा। हम यह जानते हुए भी कि कोई बात बुरी है, उसे छोड़ना नहीं चाहते हैं लेकिन फिर भी कर बैठते हैं। सन्त मत में एक ख़ास चीज़ यह है कि केवल परमात्मा से मिलने का रास्ता ही नहीं बताते बल्कि गुरु अपनी शक्ति लेकर, अपना बल देकर वह बातें आपसे छुड़ाते हैं जो रास्ते में बाधक हैं। गुरु हर वक्स ईश्वर में लीन है, हर वक्त ईश्वर से शक्ति लेता है और उस शक्ति को आपकों दान देता है।

आपने देखा होगा कि जब आप सत्संग में बैठते हैं तो मन में विचार कम उठते हैं और कुछ शान्ति मिलती है। क्यों ? वह शक्ति काम कर रही है और प्रभाव डाल रही है। वह शक्ति पाकर आत्मा को अपने असली वतन (सच खण्ड) की याद आती है। अभ्यासी को अपनी गलतियाँ दिखने लगती है और वह सच्चे मन से गुरु से प्रार्थना करता है कि ये प्रभु, हमें निकालो इस दुनिया से हमारा उद्धार करो।

(11) जतन क्या है ? सत्संग करो, जहाँ कहीं सन्त मिलें उनकी सेवा करो। वे धन नहीं चाहते, अपने लिए कुछ नहीं चाहते, केवल उनके कहने पर चलो – यही सेवा है। सन्त–मत में जितना तप और अभ्यास है सब मन और इन्द्रियों को वश में करने का है और सिद्धांत यह है कि आत्मा





को मन से न्यारा करके अपने असली प्रतीम परमात्मा में लय कर दिया जाये जो हमारा सच्चा पिता है।

(12) दुनिया में ऐसा माया जाल फैला हुआ है कि जानते हुए भी मनुष्य उसमें फंसता है। जितना वह जाल टूटता जायेगा उतनी ही दुनिया दु:ख का रूप नज़र आने लगेगी। यहाँ सिद्धियाँ नहीं मिलतीं, यहाँ दुनिया की वस्तुएँ नहीं दी जातीं, यहाँ मान आदर नहीं मिलता, उसे तो कुचला जाता है जिससे मन का मर्दन हो; दुनिया से लगाव छुड़ाया जाता है और ऐसी अनमोल वस्तु परमात्मा का प्रेम दिया जाता है उससे मिलाकर एक कर देता है।

(13) सच पर चलने से ही ईश्वर खुश होता है सच्चाई की ईश्वर है इसी रास्ते पर चलने से वह मिलता है।

(14) आत्मा हमारे सिर की चोटी **(Medulla oblongata)** पर उतरी है और नीचे की ओर शरीर में स्थित चक्रों **(Nervous Centres)** में से उतरती हुई सब जगह फैल गई। उसी से हमारा जिस्म दुनिया में काम करता है। वह उसी रास्ते से ऊपर वापिस जायेगी। हमारे शरीर में ईश्वर निवास करता है और शैतान भी। जो नीचे की तरफ़ ले जाये वह शैतान है। और जो शैतान के चंगुल से हमें ऊपर की ओर, ईश्वर की ओर, ले जाये वह सन्त है।

(15) जब तक किसी सन्त की मदद नहीं मिलती तब तक यह रास्ता तै नहीं होता, जीव मन के चंगुल से नहीं छूटता और आत्म साक्षात्कार नहीं हो सकता। हमें जो फ़ायदा हुआ गुरु कृपा से हुआ। हमें इस बात का बड़ा ग़रूर दुनियावी मामलों में था कि जो भी इरादा हम करेंगे वह पूरा होगा। दुनिया एक तरफ होती थी, हम एक तरफ़ और हम कामयाब (सफल) हुए। लेकिन मन को वश में करने के मामले में हम नाकामयाब (असफल) रहे। अपने इरादे और बलबूते से हम मन को नहीं जीत सके इस मन की **Backing** (पीठ) पर दुर्गा माता है। वह बड़ी

शक्तिशाली है ऐसी शक्तिशाली चीज़ से मनुष्य की क्या मजाल है जो लड़ सके, जीतना तो दूर रहा। सन्त रास्ता चले होते हैं, उन्हें इतनी शक्ति होती है कि वे दुर्गा से आसानी से निकाल ले जाते हैं।

(16) दूसरे तरीक़ों में मन को मारते हैं, हमारे यहाँ उसे मारते नहीं है, उसे ऊँचा रस दे देते हैं जिसे पाकर वर उससे घटिया आनन्द छोड़ देता है। जब मन का आत्मा का आनन्द मिलने लगता है तब वह इन्द्रियों के आनन्द और दुनिया की वस्तुओं के आनन्द को खुद ही छोड़ देता है क्योंकि वह उस आनन्द को फीका और झूठा समझने लगता है। मन तो बेजान है, जड़ है। उसमें आत्मा शामिल है। जब वह किसी वस्तु का रस लेना चाहता है जिसे वह पसन्द करता है तो वह आत्मा को वहाँ पर ले जाता है जहाँ पदार्थ है। आत्मा की धार जब उस पर पड़ती है तब उसमें से आनन्द मिलता है। मनुष्य का चित्त कही दूसरी जगह हो, तवज्जह **(Attention)** कहीं और हो तो आनन्द नहीं आता, जैसे बीमारी में खाने पीने की चीज़ों में वह आनन्द नहीं तो तन्दुरुस्ती में आता है। इसलिये इस दुनिया में मिलौनी का रस है जो किसी बाहरी चीज़ पर निर्भर है। निर्मल रस नहीं जो किसी पर निर्भर न हो – **(Independent of anything)**

(17) तीन साधन हैं – (1) शरीर के अन्दर जो अनहद शब्द हो रहे हैं गुरु से उनका ज्ञान प्राप्त करके शब्द की धार को पकड़ो। (2) गुरु मूर्ति का ध्यान करो (केवल उन साधकों के लिये है जिन्हें यह ध्यान बताया जाए) (3) जो नाम गुरु ने दिया है उसका हर समय हर परिस्थिति में सुमिरन करो।

ईश्वर सबका भल करे।





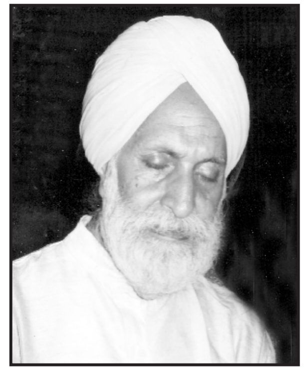

# "अमृतवाणी"

(पूज्यगुरुदेव)

***परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहिब***

( अवतरण 13-06-1912, निर्वाण 15-06-2012 )

हे प्रभु निज प्रेम देकर सबके दु:ख हर लीजिए।
'श्रीकृष्ण' के 'करतार' की अविरल कृपा के वास्ते॥

## *"गुणों को अपनायें"*

साधक यदि भगवान की पूजा करता है, आज के दिन या आगे पीछे तो भगवान के इन गुणों की पूजा करे। ऐसे गुणों को अपनाना चाहिए और इन गुणों में दीनता बहुत महत्वपूर्ण है।

भगवान तो एकता के एक ओंकार के रूप स्वरूप हैं, यदि हम भगवान की पूजा करते हैं तो हमारे भीतर में एकता का ही भाव होना चाहिए। हमारी आँखों में, हमारे हृदय में सबके प्रति सम्मान हो, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं क्योंकि सबमें ही परमात्मा है। यदि वह भावना हमारे भीतर में नहीं पैदा होती है तो हमारी साधना व्यर्थ है। भगवान स्वयं दीन रूप हैं। सुदामा, विदुर व अन्य भक्तों की विविध प्रकार से उन्होंने सेवा की है, इसी प्रकार भगवान को भी वही व्यक्ति अच्छे लगते हैं जिनके व्यवहार में, स्वभाव में दीनता है। इसलिए भगवान में दीनता है। दुर्योधन के स्वभाव में दीनता नहीं थी इसलिए भगवान का संबंधी होते हुए भी, वह परमार्थ से वंचित ही रहा। अर्जुन में दीनता थी, वह सब कुछ ले गया।

इसी प्रकार आप सब लोग गीता पढ़ते हैं तो उसमें उनकी शिक्षा

के तत्व छाँट लीजिए। भगवान की मुख्य शिक्षा का सार रूप है, समत्व भाव अर्थात् समता। इस संसार में रहते हुए कौन सा ऐसा व्यक्ति है जिसको सुख–दुख नहीं व्यापता। भगवान ने तो अर्जुन को (मानो हमारा प्रतीक बनाकर) समझाया है कि जीवन में रहते हुए उत्तेजनाएँ मिलेंगी – दुख में उत्तेजना मिलती है और सुख में भी – परन्तु व्यक्ति का कर्त्तव्य है, धर्म है कि वह सम अवस्था में रहे, विचलित न हो। अर्जुन प्रश्न पूछता है श्री कृष्ण से और उसको समझाने की भगवान कोशिश कर रहे हैं। अर्जुन बुद्धिमान था, विद्वान था, शास्त्रों का ज्ञाता था, परन्तु वह ज्ञानी नहीं था, उसके जीवन में शास्त्रों की व्यवहारिक बातें नहीं थीं। अगर वह ज्ञानी होता तो वह प्रश्न नहीं करता। वह प्रश्न करता है कि ''भगवान! जिन मनुष्यों की आप उपमा दे रहे हैं अर्थात स्थितप्रज्ञ या आत्मस्थित व्यक्ति, उनका व्यवहार कैसा होता है? वे कैसे रहते, विचरते हैं?'' भगवान उसे समझाते हैं कि ''ऐसी व्यक्ति द्वन्द्वों से मुक्त होते हैं, दुख–सुख, लाभ–हानि, राग–द्वेष, मान–अपमान आदि उन पर कोई प्रभाव नहीं कर सकते।''

यह बातें केवल पढ़ने के लिए नहीं है। इन मुख्य गुणों को जीवन में अपनाना है। महाभारत का युद्ध तो हर वक्त हर व्यक्ति के भीतर में होता ही रहता है। इस संग्राम में विजय प्राप्त करनी है, कुरुक्षेत्र का मैदान, धर्मक्षेत्र का, कर्मक्षेत्र का मैदान जो भी कुछ कह लीजिए, इसमें जिज्ञासु को विजयी होना है अर्थात् अपने मन की वृत्तियों, इन्द्रियों, मन और शरीर पर विजय प्राप्त करनी है। विजय प्राप्त करके क्या करना है? समता के भाव में सदैव ही रहना है। यही गीता में सबसे ऊँचे योग का तत्त्व ज्ञान है :–

'समत्वं योग मुच्यते।'
'दुख सुख जे परखे नहीं, लोभ मोह अभिमान।'





यही उपदेश संतों ने भी दिया है कि दुख सुख से जो व्यक्ति विचलित नहीं होता वह व्यक्ति तो स्वयं भगवान है। भगवान का यही तो मुख्य गुण है। जैसे कमल पुष्प कीचड़ भरे पानी में रहता है, वायु भी झकझोरती है, उससे भी वह प्रभावित नहीं होता। यह सर्वोत्तम उपदेश है गीता का, यही उपदेश सभी संतों ने दिया है कि ये संसार तो माया का रूप है। आप इससे भाग नहीं सकते हैं। दुख–सुख आयेंगे, हानि–लाभ भी आयेंगी परन्तु जो जिज्ञासु कमल पुष्प की तरह रहना सीख जाता है तो वह व्यक्ति महान है। उसका जीवन धन्य है, सराहनीय है।

हम सुख का जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हम जो संस्कार लेकर आए हैं, जिनसे यह मनुष्य चोला मिला है उन संस्कारों से निवृत हो जायें – क्योंकि जब तक संस्कारों से निवृत्त नहीं होंगे हमें मोक्ष प्राप्त नहीं होगा।

भगवान अर्जुन से कह रहे हैं कि ''इन संस्कारों से अगर तुम्हें लड़ना है तो ईश्वर का आश्रय लेकर लड़ो।'' प्रत्येक व्यक्ति या जिज्ञासु को गुरु का दामन पकड़कर, शास्त्रों का अथवा ईश्वर का आश्रय लेकर इस संसार रूपी कुरूक्षेत्र में आगे बढ़ना है। पिछले संस्कार तो भुगतने हैं ही परन्तु आगे के लिए संस्कार नहीं बनने देने हैं क्योंकि मरने से पहले अगर हमारे संस्कार ख़त्म हो जाते हैं और नए संस्कार नहीं बनते हैं तब तो हमें मोक्ष–प्राप्ति का चरम सुख मिलेगा, अन्यथा फिर वही जन्म–मरण के चक्कर में पड़ जायेंगे।

भगवान ने बड़ी सरलता से सबको समझाया है और ऐसा उपदेश दिया है कि पढ़ा–लिखा आदमी, स्त्री–पुरुष बच्चे, सभी उसका पालन कर सकते हैं अर्थात् जो भी काम हम करें उसके फल के साथ चिपकें नहीं। उसके साथ हमारी आसक्ति न हो, मोह न हो।

इस बारे में एक प्रसंग है कि भरतजी ने शिकारी से बचाकर एक मृग शावक को पाल लिया। अचानक मृग का बच्चा एक दिन खो गया तो भरत जी रोने लगे। मोह के इसी संस्कार वश उन्हें तीन जन्म और लेने पड़े।

यदि किसी के साथ उपकार या सहानुभूति करके थोड़ा सा मोह हो भी गया है तो पढ़ा लिखा व्यक्ति कहेगा कि यह कैसी बात है – एक तो पुण्य किया, उसे याद भी न करें? पुण्य तो ठीक किया लेकिन संस्कार बन गया। जब इन्सान मोह में फँस जाता है (मोह के दो रूप है, राग और द्वेष) तो उससे संस्कार बनते हैं। इसलिए भगवान ने कहा है कि कर्म के साथ आसक्ति न हो, यही नहीं, कर्म का जो फल है उसके साथ भी बंधन न हो। कर्म करिये परन्तु फल की आशा न हो, जो भी फल मिलता है अच्छा या बुरा, उसके साथ किसी प्रकार की आसक्ति न हो।

यह करके देखिए और देखिएगा कितनी प्रसन्नता मिलती है। मोक्ष मिलेगी या नहीं मिलेगी, यह तो देखा जाएगा। परन्तु उस वक़्त देखिए कि आपके चित्त की हालत क्या होती है। जब आप कर्म फल के साथ किसी प्रकार की आसक्ति नहीं रखते हैं तो कैसी विचित्र खुशी मिलती है।

*मेरा मुझमें कुछ नहीं,*
*ज़ो कुछ है सो तोरा।*
*तेरा तुझको सौंपते*
*क्या लागे है मोरा।।*

# ''गुरु-प्रसादी''

## ''विचारों को शुद्ध करें''

किसी भी व्यक्ति के इन्द्रिय निष्पादन से उसकी वैचारिक स्थिति का अन्दाजा बड़ी सरलता से लगाया जा सकता है। किसी व्यक्ति के विचार कितने पवित्र और आत्मिकता से परिपूर्ण हैं इस बात का अन्दाजा उसकी गतिविधियों से उसके लौकिक व्यवहार से उसकी वाणी की मधुरता से भली भांति लग जाता है। विचारों का प्रादुर्भाव मन की अवस्था से होता है और मन की बनावट पूर्व जन्म के संस्कारों तथा वर्तमान में भोजन सौहबत तथा साहित्य की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। कहते हैं ''जैसा अन्न वैसा मन'' अर्थात् हक हलाल (ईमानदारी) की कमाई से कमाया हुआ भोजन ईश्वर की याद में पकाया गया हो और उसका ग्रहण करने वाला कृतज्ञ भाव से उसे प्रभू चरणों में अर्पित करके ईश्वर की याद में ग्रहण करें तो वो अमृत बन जाता है। उससे बनने वाला रक्त हमारे हृदय को जो कि भावनाओं का प्रमुख केन्द्र है आत्मिकता से भरपूर कर देता है। जो व्यक्ति अभी तामसिक या राजसिक वृति पर हैं वो भी अगर अपने भोजन के प्रति सचेत हो जाते हैं तो थोड़े समय में पवित्र भोजन प्रसादी उनके जीवन में एक विचित्र आत्मिक क्रांति ले आती है। और वे भी राजसिकता से सात्विकता और सात्विकता से शनैः-शनैः आत्मिकता में प्रवेश करने लगते हैं। बशर्ते है कि भोजन –

1. हक हलाल की कमाई से व्यवस्थित किया गया हो।
2. भोजन पूर्णता सात्विक (माँसाहारी न हो)।

3. भोजन बनाने वाला पवित्र विचारों से ईश्वर की याद में भोजन बनाये।
4. भोजन ग्रहण करने वाला उसे कृतज्ञ भाव के साथ पहले अपने इष्टदेव को समर्पित करे और उनके चरणों में उसमें से कुछ ग्रहण करके भोग लगाने हेतु निवेदन करे।
5. बड़े विश्वास के साथ ये विचार करें कि इस भोजन में से इष्ट देव ने अपना अंश ग्रहण कर लिया है और हमारे भोजन की थाली को अपने प्रकाश रूप कृपा प्रसादी से भर दिया है।
6. तत्पश्चात बड़े ही विनम्र भाव से नत मस्तक होकर प्रेमपूर्वक इष्टदेव की पवित्र स्मृति में इस प्रसाद स्वरूप भोजन को धीरे–धीरे इतना चवाकर खाये कि ये तरल रूप हो जाये एहतियात ये है कि ईश्वर की स्मृति निरन्तर बनी रहे।

**सौहबत –**

भोजन के बाद दूसरी प्रमुख चीज सौहबत है जैसा संग वैसा रंग संत–मत में हमारे बुजुर्गों ने विशेषकर नाजिन्स और गैर आदमी और गैर सौहवत से परहेज करने को कहा है गैर सौहबत का मतलब अनात्मिक अर्थात् नास्तिक व्यक्ति से है। जो लोग विपरीत विचारों के है या जिनका जीवन धर्म संगत नहीं है। उनकी संगत से सर्वदा बचना चाहिये क्योंकि ऐसे लोगों के भीतर भरी हुयी नकारात्मकता हमारे हृदय को प्रदूषित करती है और उसका गहरा प्रभाव हमारे विचारों की पवित्रता पर ऐसे पड़ता है जैसे खड़ी फसल पर पाला पड़ गया हो इसके लिये यम नियम का दृढ़ता से पालन और गुरू का चेत कर किया गया सत्संग विशेष लाभकारी होता है। सिवाय ईश्वर के बाकी सब कुछ असत्य है सत्य सिर्फ ईश्वर है इसलिये सत्संग का वास्तविक अर्थ होता है ईश्वर का संग निरन्तर सत्संग करते रहने से हमारे विचार पवित्र, अति पवित्र होते चले





जाते हैं और धीरे–धीरे पवित्र विचारों से हमारी अध्यात्मिक समता निरन्तर आत्मिक आयाम में ठहरने लगती है। और एक दिन आता है कि मन की वृत्तियाँ उत्तरोत्तर बदलते हुए आत्मिक हो जाती है। फिर गिरने का डर नहीं रहता सौहबत वो धारा प्रवाह है जो व्यक्ति जैसी सौहबत उठाता है उसके रंग से वो वैसा ही रंग जाता है। यदि हम वास्तव में निर्मल परमार्थ कमाना चाहते हैं तो विचारों की पवित्रता आवश्यक है, उसके लिए हमारी सौहवत आत्ममयी होना परम आवश्यक है। दुनियावी गलाज़त से बचे और निरन्तर गुरूदेव के सत्संग का आश्रय पकड़े रहे अपने प्रयास से अगर सफलता नहीं मिलती है तो गुरू चरणों में रोयें, गिड़गिड़ाये और उनसे शक्ति मांगे वे अवश्य अपना आत्मिक बल प्रदान करेंगे, जिससे निश्चित ही हमारी साधना का वैचारिक स्तर भावमयी प्रेममयी बनेगा।

**साहित्य –**

हम अपने विचारों को जिस स्तर का बनाना चाहते हैं। उसी स्तर के साहित्य का अध्ययन हमें करना चाहिये दरअसल साहित्य हमारे मन का दर्पण होता है अर्थात् लिखने वाला अपनी लेखनी की अभिव्यक्ति से उस साहित्य में अपनी मानसिक दशा का चित्रण करता है। जिसका इस साहित्य को पढ़ने वाले के चित्त पर उसी के अनुरूप प्रभाव पड़ता है और वैसे ही उसके विचार बनते जाते हैं। इससे ये स्पष्ट है कि साहित्य हमारे विचारों का एक प्रमुख प्रेरणा स्रोत है। अतः साहित्य के चयन में सर्वदा बड़ी सावधानी बरतनी चाहिये। हमारे दादा गुरूदेव ने जहाँ विचारों के उद्गम स्रोत मन की चौकीदारी करने पर बल दिया है, वही उनका आदेश था कि इसको दुनियावी गलाज़त से हटाकर संतों की वाणी महापुरूषों के उपदेश और धर्मग्रन्थों के अध्ययन में लगाया जाये। जब हम निरन्तर धार्मिक साहित्य पढ़ेंगे तो हमारी मन बुद्धि पर वैसा ही प्रभाव पढ़ेगा और उसी के अनुरूप हमारे विचार बनेंगे।

व्यक्ति अपने विचारों के आधार पर ही अपना आदर्श स्थापित करता है और उसको प्राप्त करने का भरसक प्रयास करता है। हमारे लिये ज़रूरी है कि हम अपना आदर्श ऊंचा करते चले जायें। अपने मन की गति को देखते रहें इसको विपरीत धारा में जाने से रोकें , शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करें और उसमें भी मिताहार करें मिताहार का अर्थ होता है आवश्यकता अनुसार या आवश्यकता से कुछ कम अर्थात् यदि चार रोटी की भूख है, तो 3 रोटी ही ग्रहण करें। संभवतः बचे हुये खाली स्थान में परमात्मा अपना प्रेम भर दे शरीर के लिये जैसे भोजन आहार होता है वैसे ही मन और बुद्धि के लिये भी मिताहार का नियम लागू होता है :—

1. सामान्यतः जितना आवश्यक हो उतना ही बोलें अन्यथा निरन्तर ईश्वर की याद में मौन रहें।
2. जो बोलें बहुत तोलमोल के बोलें और बोलने के पहले सम्भावित परिणामों को सोच लें।
3. अनावश्यक अनरगल रूप से अपनी बुद्धिमता दिखाने के लिये किसी की बातों में दखलन्दाजी करना उचित नहीं।
4. अकस्मात प्रतिक्रिया करने से हमेशा बचना चाहिये। हर व्यक्ति अपने—अरने कर्मफल से बंधा हुआ है हमें उसको अपने मापदंड से न्यायाधीश बनकर सही गलत का फ़ैसला देने का कोई अधिकार नहीं।
5. अपनी सोच को ऊंचा उठाते जायें और विशाल ह्रदयता को अपनाते हुए न सिर्फ क्षमा के महान गुण को धारण करें बल्कि क्षमा करने के बाद ही उससे अनासक्त हो जायें अर्थात भूल जायें, तनिक भी अहंकार न आने दें।
6. परमात्मा को रिझाने के लिए प्रेम और दीनता वो दो आभूषण हैं जिनको धारण करने के बाद और कुछ करने की आवश्यकता नहीं रहती।





7. ये साँसें बहुत अनमोल हैं इनको सम्हाल कर ईश्वर की याद में खर्च करें अर्थात हर सांस के साथ ईश्वर की स्मृति बनी रहे।
8. सावधान रहें कोई सांस ईश्वर की याद से खाली न जाने पाये जो स्वांस ईश्वर की याद में गुजरे वही सार्थक है वर्ना निरर्थक।
9. दुनिया के हर काम को ईश्वर की ओर से समझते हुये यथा लाभ—सन्तोष के भाव से अथवा राज़ी ब रज़ा के सिद्धान्त से अपनायें।

परमार्थ के रास्ते में सफ़लता प्राप्त करने के लिये विचारों का आत्ममयी होना परम आवश्यक है, और सारी बातों का सार ये है कि जागरुकता से चेतकर सद्गुरु का सत्संग करें उनके आदेशों का सर्तकता से पालन करें उसका परिणाम क्या होगा ?

**''तू तू करना तू भया, मुझ में रही न हूँ,**
**आपा पिरका मिट गया जित देखां तित तू''**

पूज्य गुरूदेव सबको अपना आत्मिक बल प्रदान करें।

(एक अकिंचन)

*कहत 'कबीर' मैं कछु नहीं कीन्हा ।*
*सहज सुहाग पिया मोहे दीन्हा ॥*

# ''बातें आत्मानुभव की''

## चुनौतियाँ और बाधायें

*मैं नहीं जानता कि कैसे, लेकिन सबसे स्याह समय में भी मैं इस प्रोडक्ट में इतना ज़्यादा यक़ीन करता था कि मैं जानता था मैं कामयाब होने वाला हूँ। अगर आप डटे रहते हैं और आप सृष्टि से माँग करते हैं - तो देती है।*

*सफल हो रहे व्यक्ति की एक बाधा यह है कि जब अस्वीकृति मिलतीहै, तो वह प्रयास छोड़ देता है। किसी भी चीज़ में सफल बनने की एक कुंजी है बहुत सारी अस्वीकृति के लिए तैयार रहना और ख़ुद पर इसका असर न होने देना। बहुत से लोग कोई चीज़ शुरू करते समय इसके लिए तैयार नहीं होते, इसलिए वे सोचते हैं कि वे असफल हो गए हैं और इससे वे रुक जाते हैं। यदि हमें ढेर सारी अस्वीकृतियाँ न मिली होतीं, तो मैं कभी जॉन पॉल मिचेल सिस्टम्स शुरू ही नहीं कर पाता।*

**– जॉन पाल डिजोरिया**





# ''डायरी के पन्नों से''

(द्वारा – पूज्य गुरुदेव परमसंत डॉ. करतार सिंह जी साहिब)

- पत्थर भी खुश हैं क्योंकि उनको कोई चिनता नहीं, वनस्पति भी खुश है खिलती है क्योंकि वो अपने आप में संतुष्ट है, पशुओं में भी आत्मा है परन्तु चेतना नहीं।
- मनुष्य दु:खी है क्योंकि उसने अपने से बड़ी वस्तु के प्रति सुना है तथा कभी–कभी अनुभव भी किया है, वो बड़ी वस्तु की खोज में है वो मिलती नहीं इसलिए वो दु:खी है, वास्तव में यह दु:ख उसके सुख का कारण है, इसलिए दु:ख से घबराना नहीं चाहिये।
- विश्वास आखिर आयु तक नहीं आता जब तक वास्तविक हालत न हो जावे।
- करामात :– हमें पता नहीं क्यूं, कुछ बुज़ुर्ग इसका इस्तेमाल करते हैं। हम एक बार मौन में बैठ हुए थे, एक सत्संगी को लिखा था कि, उसका लड़का पास हो जायेगा तथा दूसरा लड़ा टी.बी. के रोग से ठीक हो जायेगा, ऐसा ही हुआ। हाँलाकि पहले लड़के ने पेपर बिल्कुल नहीं किया था दूसरा लड़का ठीक होने वाला नहीं था।
- जिस समय महापुरुष आत्मा के स्थान पर हो वो जो कह दे ठीक हो जाता है।
- संत बद्दुआ नहीं देते, सन्यासी श्राप दे देते हैं। संत अपने ऊपर लानत डालता है, यह ज़्यादा खतरनाक है, जिसके बावत लानत डालेगा उसी का नुकसान हो जायेगा। पूज्य लाला जी का अपने अफ़सर के लिए ऐसा करना। चाचा जी का अपने तहसीलदार के लिये, पूज्यलाला जी महाराज का कन्ट्रोल करने के लिए कहना।

# ''हितोपदेश''

- गुा कट जाता है। फिर अपने असली वतन (देश) को वापिस चले जाते हैं वर्ना जन्म–जन्म इसी तरह भ्रमते रहते हैं।

**(परम संत डॉ. श्रीकृष्ण लाल जी महाराज)**

21

26

# ''संस्मरण

(यादें दादा गुरुदेव

***संस्मरण नं.***

मैं उन दिनों मोहल्ला नाथूराम, कास
था। हाल ही में मकान के ऊपर न'

***संस्मरण नं.***

ए'

***संस्मरण नं.***

ए'

***संस्मरण नं.***

ए'